अनमोल रिश्ता

वार्षिक पत्रिका

फरवरी 2025

विशेष

स्पोर्ट्स डे

शैक्षणिक भ्रमण

विद्यार्थी जीवन का अनुभव

छात्रावास का अनुभव

वार्षिक पिकनिक ....

भारत का संविधान

From the Provincial

Fr. Vincent Hansdak, SJ

प्रिय स्टाफ एवं छात्र-छात्राएँ,

सर्वप्रथम मैं कृतज्ञतापूर्ण हृदय से PTEC परिवार को – अनमोल रिश्ता – जैसी ज्ञान एवं कला से पूर्ण महाविद्यालय पत्रिका प्रकाशन के लिए बधाइयाँ एवं शुभकमनाएं देता हूँ।

आज पूरे मानव समाज में शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग बन गई है। पूर्ण शिक्षा के बिना जीवन में कोई भी कार्य सम्पन्न करना कठिन साबित होता है। शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय होता है। जीवन से जुड़ी विभिन्न बातें, प्रकृति की विभिन्न रहस्याएं, विज्ञान की नयी खोजें तथा देश-विदेश के पल-पल की विभिन्न खबरें हम शिक्षा के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए शिक्षा को जीवन का प्रकाश माना जाता है। शिक्षा मानव जीवन की एक तीसरी आँख के रूप में काम करती है। क्योंकि यह जीवन को एक अलग नजरिया से देखने तथा समझने में मदद करती है। यह हमें जीवन के विभिन्न रहस्याओं को समझने तथा जीवन को अर्थपूर्ण तरीके से जीने में मदद करती है। अतः शिक्षा के बिना हमारा मानव जीवन अधूरा रह जाता है।

लेकिन, प्रश्न उठता है- मानव जीवन के लिए सही शिक्षा क्या है? या आदर्श शिक्षा क्या है? विभिन्न शिक्षाविद्यों ने अलग-अलग नजरिये से शिक्षा को पारिभाषित किया है, जैसे:-

"Real education consists in drawing the best out of yourself. What better book can there be than the book of humanity?" **By M. K. Gandhi**

"Learning gives creativity, creativity leads to thinking, thinking provides knowledge, and knowledge makes you great." **By APJ Abdul Kalam**

"Education is the manifestation of the divine perfection, already existing in man." **By Swami Vivekananda**

"The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence." **By Rabindranath Tagore**

"Education according to Indian tradition is not merely a means of earning a living; nor is it only a nursery of thought or a school for citizenship. It is initiation into the life of spirit and training of human souls in the pursuit of truth and the practice of virtue." **By Sarvepalli Radhakrishnan**

अतः यदि हम इन सभी परिभाषाओं का निचोड़ एक सारांश के रूप में निकालें तो दो प्रमुख बातें हमारे सामने उभरकर आती है। पहला- उपर्युक्त शिक्षा वही है जो मानव जाति को, सभी जीवों को एवं प्रकृति को सम्मान करना सिखाता हो तथा सभी को एक-दूसरे के साथ जोड़कर जीने में मदद करती हो। दूसरा- आदर्श शिक्षा वही है जो मानव को एक गुणवत्तापूर्ण एवं अर्थपूर्ण जीवन जीने में मदद करती है।

इसलिए प्रिय स्टाफ एवं छात्र-छात्राएँ, आप सभों को एक साथ एक महाविद्यालय परिवार के रूप में मंथन करने की आवश्यकता है। क्या PTEC की शिक्षा-दीक्षा प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को जीवन में गुणपूर्ण बनने तथा जीवन एवं प्रकृति को जानने एवं समझने के लिए मददगार है अथवा नहीं? क्या PTEC की शिक्षा केवल विद्यार्थियों के वार्षिक प्रगति-पत्र सुधारने में विश्वास करती है अथवा प्रत्येक विद्यार्थी को सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान कर उसे एक सक्षम एवं गुणपूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार करता है? उपरोक्त पारिभाषाओं से स्पष्ट है कि महाविद्यालय के द्वारा हमें विद्यार्थियों के जीवन निर्माण के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व निर्माण, चरित्र निर्माण तथा एक विकसित समाज एवं राष्ट्र निर्माण पर विशेष बल देना चाहिए।

I wish and hope that the principal and staff of PTEC will continue to work hard together in achieving the goals and objectives of Jesuit education and help every student to become a better human person in life.

With all God's Blessings….

Sincerely Yours,

Fr. Vincent Hansdak, SJ
Provincial Superior,
Hazaribag Jesuit Province

From the Principal

Dr. (Fr.) PJ James, SJ

प्राचार्य का संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि कॉलेज अपनी वार्षिक पत्रिका "अनमोल रिश्ता" का नया संस्करण प्रकाशित कर रहा है। साल की घटनाएँ और खबरें हमें शैक्षणिक वर्ष का जश्न मनाने में मदद करती हैं। लेखन के अलावा, कला के विभिन्न रूपों के माध्यम से भी अपनी रचनात्मकता को हम व्यक्त करते हैं, जिनमें से कुछ को पत्रिका में भी शामिल किया गया है। पर छात्र अध्यापकों (pre-service teachers) के लिए इसकी क्या प्रासंगिकता है? आपको क्यों अधिक पढ़ना और खुद को अभिव्यक्त करना चाहिए?

पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें आवश्यक ज्ञान प्रदान करती हैं, लेकिन वह शैक्षिक परिदृश्य का केवल एक अंश हैं। व्यापक रूप से पठन शिक्षक के दृष्टिकोण को समृद्ध करता है, उन्हें छात्रों की पृष्ठभूमि और चुनौतियों को समझने में मदद करता है, और समावेशी कक्षा के माहौल को बढ़ावा देता है। वर्तमान घटनाओं और वैज्ञानिक प्रगति का नवीनतम ज्ञान शिक्षकों को प्रासंगिक बनाए रखता है, पाठ्यक्रम की सामग्री को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जोड़ता है, सीखने को सार्थक बनाता है, और आलोचनात्मक सोच कौशल (critical thinking skills) विकसित करता है।

छात्रों के भावनात्मक और सामाजिक ताने-बाने को आकार देना शिक्षक की भूमिका में शामिल है। साहित्य, आत्मकथाएँ और सामाजिक टिप्पणियाँ पढ़ने से विभिन्न जीवन अनुभवों की समझ और सहानुभूति गहरी होती है, जो कक्षा के उचित माहौल के लिए महत्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय विषयों पर पुस्तकें छात्रों के व्यवहार और सीखने की शैलियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। ये शिक्षकों को छात्रों की भावनात्मक भलाई का समर्थन तथा उचित कक्षा प्रबंधन करने में मददगार हैं।

शिक्षकों के लिए संचार मौलिक है। विविध पाठों से लेखन, बोली और अन्य संचार कौशल में सुधार होता है तथा स्पष्टता और प्रेरक क्षमता बढ़ती है, जो कक्षा में मूल्यवान है। कुशल संचारक जटिल अवधारणाओं को सुलभ तरीके से व्यक्त करते हैं। यह बेहतर छात्र क्रियाशीलन को बढ़ावा देता है। शिक्षकों को छात्रों की वकालत करने, सहकर्मियों के साथ सहयोग करने और अपने पेशे को आगे बढ़ाने में सक्षम बनाते हैं। सचमुच "संचार की कला नेतृत्व की भाषा है।" (जेम्स ह्यूम्स)

महात्मा गांधी ने कहा था: "ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो, ऐसे सीखो जैसे कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।" व्यापक रूप से पढ़ना और खुद को अभिव्यक्त करना आजीवन सीखने (life-long learning) को बढ़ावा देता है, जो शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें नए शिक्षण विधियों और शैक्षिक अनुसंधान के अनुकूल होना चाहिए। विविध पाठ बौद्धिक जिज्ञासा और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं, जो छात्र अध्यापकों (pre-service teachers) को नई रुचियों का पता लगाने, नवीन शिक्षण दृष्टिकोण विकसित करने और शैक्षिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक है।

छात्र अध्यापक शिक्षा का व्यक्तिगत दर्शन विकसित करते हैं जो उनके अभ्यास का मार्गदर्शन करता है। व्यापक रूप से पढ़ना और विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करना शिक्षण और सीखने के बारे में मूल्यों को स्पष्ट करने में मदद करता है। यह आत्म-जागरूकता शिक्षण प्रथाओं को व्यक्तिगत लक्ष्यों के साथ संरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा में रचनात्मक और अभिनव सोच आवश्यक है। विविध विचारों और कलात्मक अभिव्यक्तियों के संपर्क में आने से रचनात्मकता और समस्या- समाधान कौशल को बढ़ावा मिलता है। रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न होने वाले छात्र अध्यापक इन अनुभवों को शिक्षण में लाते हैं, जिससे सीखना गतिशील और आकर्षक बनता है, और एक जीवंत, अनुकूली शैक्षिक प्रणाली को बढ़ावा मिलता है।

शिक्षण चुनौतीपूर्ण है, जिसमें कक्षा प्रबंधन, विविध शिक्षण आवश्यकताएँ और नौकरशाही बाधाएँ शामिल हैं। चिंतनशील लेखन या रचनात्मक कार्य भावनाओं को संसाधित करने, मानसिक और भावनात्मक लचीलापन बढ़ाने और शिक्षा के प्रति जुनून और प्रतिबद्धता बनाए रखने में मदद करते हैं।

पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकों से परे पढ़ना और खुद को अभिव्यक्त करना छात्र शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है। यह ज्ञान को व्यापक बनाता है, सहानुभूति को बढ़ाता है, संचार को बेहतर बनाता है, आजीवन सीखने को बढ़ावा देता है, शिक्षा का व्यक्तिगत दर्शन बनाता है, रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करता है, और लचीलापन और अनुकूलनशीलता को मजबूत करता है। ये अभ्यास छात्र शिक्षकों के जीवन को समृद्ध करते हैं, उन्हें प्रभावी, दयालु और प्रेरणादायक शिक्षक बनाते हैं।

"सबसे अच्छे शिक्षक वे होते हैं जो आपको बताते हैं कि आपको कहाँ देखना है, लेकिन आपको यह नहीं बताते कि आपको क्या देखना है।"- एलेक्जेंड्रा के. ट्रेनफोर

Dr. (Fr.) PJ James SJ

संपादकीय

संपादकीय टीम अनमोल रिश्ता पत्रिका के संस्करण में आप सभी का हार्दिक स्वागत करता है। हम सभी प्रशिक्षणार्थी अपने अविस्मरणीय क्षणों और उपलब्धियों को आपके समक्ष प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हैं। इस पत्रिका के द्वारा हमारा यह प्रयास है कि अपने युवा पीढ़ी को सृजनात्मक सोच की ओर अग्रसित करना। उनमें रचनात्मकता और मौलिकता का विकास करना। हमारे मनीषियों ने भी कहा है कि यदि विद्यार्थी जीवन सरल और आचरण संस्कारी होने के साथ-साथ मन के भाव भी कोमल हो तो, सोने पे सुहागा है। इस पत्रिका के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों के मन के कोमल भावों को ही उकेरने का एक छोटा सा प्रयास है।

कहा जाता है कि बीता हुआ समय वापस नहीं आता है, इसलिए हमारा यह भी प्रयास है कि अपने इन प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण काल के क्षणों को समेटकर आपके सामने प्रस्तुत करना। आने वाले समय में दूसरे भी साहित्य सृजन के लिए इससे प्रेरित हों।

हम सभी प्रशिक्षणार्थी कल के भविष्य हैं। हमारे ही कंधों पर देश की आन-बान और शान है। आने वाले समय में अपने भारतीय पर्व-त्योहारों, ठाट-बाट और खेत खलिहानों को हम ही अपनी रचनाओं के माध्यम से सिंचित करेंगे।

अतः यह संपादक टीम आपके योगदान की सराहना करता है। अनमोल रिश्ता में हुए सृजनात्मक कार्य और मन के भावों व विचारों को आपके सम्मुख रखते हुए अत्यधिक प्रसन्नता है।

शिक्षक सलाहकार

डॉ. फा. पी.जे.जेम्स

सिप्रियन सुरीन

डोली लकड़ा

सुशीला एक्का

गाब्रिएल किंडो

संपादक मण्डल

प्रदीप बड़ा

लिबिन बखला

सुजाता कुमारी सिंह

अनुक्रमणिका

1. महाविद्यालय स्पोर्ट्स डे	संपादक	8
2. तारों की छाँव में गैंगटोक	अंशुमाला खलखो	9
3. शैक्षणिक भ्रमण	अनुप्रभा मिंज	9
4. मेरी पहली यात्रा का अनुभव	रीता बखला	10
5. आचार सेमिनार का अनुभव	अलका जोजो	11
6. विदाई समारोह	सुधीर ओड़ेया	12
7. खट्टी-मीठी सी यादें	अंजली टोप्पो	13
8. द्वितीय वर्ष का विदाई समारोह	मनीषा टेटे	13
9. एग्जाम का सीजन	सोनाली एक्का	14
10. सेमेस्टर एग्जाम	अनुरागिनी तिर्की	14
11. Summar Holidays	Prashant Kullu	15
12. गर्मी छुट्टी की सार्थकता	प्रियाल मिंज	15
13. परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताया	शांति मुर्मू	16
14. Summar Vacation	Susana Toppo	16
15. The Freshers' Day	Josphin Marandi	17
16. फ्रेशर्स डे का अनुभव	अनिश कुमार पासवान	17
17. कॉलेज का पहला दिन	अनुजा नेहा पन्ना	18
18. हॉस्टल का पहला दिन	ग्रेस केरकेट्टा	18
19. The first day of my hostel life	John Ronald Kongari	19
20. दूसरों का जीवन निर्माण शिक्षक का कर्तव्य	अलबीना कंडुलना	19
21. छात्रावास अनुभव	सिगिन मुंडा	20
22. हॉस्टल लीडर का अनुभव	नोशीला कुमारी	20
23. हॉस्टल अनुभव	अविरल तोपनो	20
24. हॉस्टल अनुभव	समीरा टेटे	21
25. विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य	रुफ़ीना सुरीन	21

अनुक्रमणिका

26. हॉस्टल अनुभव	करिश्मा लकड़ा	21
27. मुर्दा कल्याण और रोटी बैंक	प्रिंस कुजूर	22
28. लोग क्या सोचेंगे, सोचकर पीछे नहीं हटना	निर्मला दिग्गी	22
29. संत इग्नासियुस लोयोला का पर्व	सुधीर ओड़ेया	23
30. कम समय में ही अधिक आनंद लिया	अरनेस्ट भेंगरा	23
31. सच्ची शिक्षा	रोशन केरकेट्टा	24
32. रोपा का अनुभव	अनीता मिंज	25
33.रोपनी कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया	विल्सन खेस	26
34. धान रोपनी	जेवियर भेंगरा	26
35. आखिर शिकायत है क्यों?	रिया रितिका हेम्ब्रोम	27
36. आज नहीं तो कल	आभा तिर्की	27
37. विश्व आदिवासी दिवस का महत्व	नीलकुसुम एक्का	28
38. मुझे गर्व है कि मैं एक आदिवासी हूँ	शीला असुर	28
39. वीरों और देशभक्तों को याद किया	सुधीर ओड़ेया	29
40. बालिका दिवस	श्रीमती डोली लकड़ा	30
41. नववर्ष 2025	अलिशा बड़ा	31
42. नया साल का अनुभव	तनवी केरकेट्टा	31
43. वार्षिक वनभोज	प्रियंका हंसदा	32
44. समय प्रबंधन	श्री गाब्रिएल किंडो	33
45. जीवन जीने की कला, आत्मविश्वास	सुषमा कुमारी	35
46. फोटो सेशन		36

महाविद्यालय
स्पोर्ट्स डे

2 फ़रवरी 2024 को वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता का दिन था। इसका आयोजन प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, संत जेवियर +2 उच्च विद्यालय और अभ्यास मध्य विद्यालय तीनों समन्वित रूप से सम्पन्न किए। महाविद्यालय और अभ्यास मध्य विद्यालय के द्वारा आकर्षक ड्रिल की प्रस्तुति कर सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि के रूप में उत्तरी छोटानागपुर की आयुक्त श्रीमती सुमन कैथरीन किस्पोट्टा और विशिष्ट अतिथि के रूप में क्षेत्रीय संयुक्त शिक्षा निदेशक श्रीमती सुमनलता तोपनो बलिहार दोनों की गरिमामयी उपस्थिति हम सभी के लिए गौरव की बात रही। दोनों ने अपने आकर्षक व्यक्तित्व एवं आशीर्वचन में प्रभावशाली शब्दों से हमारा हौसला बुलंद किया। दोनों को हृदय से धन्यवाद प्रकट करने के लिए बाद में महाविद्यालय के प्राचार्य के द्वारा धन्यवाद कार्ड दिया गया। प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों ने लगभग 20 दिनों तक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की।

तारों की छाँव में गैंगटोक

कहा जाता है कोई भी सुंदर चीज़ रात में और भी ज्यादा सुंदर, खुशनुमा हो जाती है। अपने शैक्षिक भ्रमण में जब हमने सिक्किम की राजधानी गंगटोक में प्रवेश किया, तब शहर की खूबसूरती देखते ही बन रही थी। रात्रि के समय में हमारी गाड़ी तारों से भरे आकाश में गोते लगा रही थी। घरों से निकालने वाले प्रकाश के कारण तारे जमीन पर नज़र आ रहे थे। उस पर तीस्ता नदी से बहने वाली पानी की आवाज़ वातावरण को और भी ज्यादा खुशनुमा बना रही थी। रात्रि के समय घाटियों में बसा यह शहर बहुत ही सुंदर नज़र आ रहा था। जब मैंने खिड़की से बाहर झाँककर देखा तो घाटियों में चढ़ाई करता बस ऐसे लग रहा था मानों झूले में झूल रहा हो। इसलिए कहा जाता है –"प्रकृति के साथ चलने का मतलब हजार चमत्कारों को एक साथ देखने जैसा है।

"जितना तुम कुदरत की तरफ जाओगे
उतना रब के करीब खुद को पाओगे"

अंशुमाला खलखो
द्वितीय वर्ष "अ"

शैक्षणिक भ्रमण (राँची-गैंगटोक)

मैं भ्रमण के लिए बहुत खुश थी और इसकी तैयारी मैं एक सप्ताह पहले से ही कर रही थी। इतनी लंबी ट्रेन का सफर मेरे लिए पहली बार था। गैंगटोक का लोकल साइट सीन जैसे- फ्लावर शो, हनुमान टेक, बॉटानिकल गार्डेन, वाटर फॉल, हैंडीक्राफ्ट आदि बहुत ही अच्छे लगे। टैक्सी के द्वारा भ्रमण अच्छा लगा। वहाँ के मकानों की बनावट भी इतनी सुंदर थी कि मैं देखते ही रह जाती थी कि पहाड़ी स्थान में इतने सुंदर-सुंदर मकान कैसे बने हैं। वहाँ का वातावरण भी शुद्ध था। कहीं भी गंदगी नहीं दिखाई दी।

चाँगो लेक और बाबा मंदिर का दृश्य बहुत ही मनोरम था। बाबा मंदिर में मेरी तबीयत अच्छी नहीं होने के कारण मस्ती नहीं कर पायी। क्योंकि वहाँ बहुत ठंड थी। बाबा मंदिर से लौटते वक्त बर्फ से खेली। चाँगो लेक के पास याक की सवारी की तो मुझे अच्छा लगा।

वहाँ मुझे नये-नये स्थानों को देखना और उसके बारे में जानना बहुत अच्छा लगा। इस तरह शैक्षिक भ्रमण मेरे लिए बहुत ही शिक्षाप्रद रहा।

अनुप्रभा मिंज
द्वितीय वर्ष 'ब'

मेरी पहली यात्रा का अनुभव

जब महाविद्यालय की ओर से शैक्षणिक भ्रमण की बात हुई तो मुझे खुशी हुई क्योंकि मैं कभी शैक्षणिक भ्रमण के लिए नहीं गई थी। यह मेरी पहली यात्रा थी। मुझे लगता था कब वो दिन आयेगा और मैं अपनी यात्रा शुरू करूँ।

हमें महाविद्यालय की ओर से शैक्षणिक भ्रमण के लिए गैंगटोक लिया गया। जलपाईगुड़ी से सिक्किम के लिए हमने शाम को अपनी यात्रा शुरू की। रात की यात्रा इतना आनंदमय था कि उनको मैं शब्दों में बयां न कर पाऊँ। क्या नज़ारा था बाँयीं ओर पहाड़ ही पहाड़ और दायीं ओर खाई ही खाई और नदियां बहुत ही आकर्षक लग रही थी। जब मैंने बस की खिड़की से झांक कर देखा तो आसमान में तारे टिमटिमाते नजर आ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि मैं आसमान में पहुँच गई हूँ। पर वे तारे नहीं, वे तो पहाड़ियों में बने घर की बत्तियाँ जल रही थी। उन बत्तियों को देखकर मुझे लग रहा था कि मैं तारों के बीच घूम रही हूँ। गैंगटोक का बर्फ तो पूछो ही मत, ऐसा लग रहा था मानों चारों ओर नमक बिखेरा हुआ है। मैंने ऐसा बर्फ कभी नहीं देखा था। मैंने अपने साथियों के साथ बर्फ में खूब मस्ती की। बर्फ इतना फिसलन था कि ऊपर से नीचे फिसलने में बहुत मजा आ रहा था।

इस तरह मेरी यह यात्रा बहुत ही आनंदमय थी और मैं बहुत ही खुश थी।

रीता बखला
द्वितीय वर्ष 'अ'

आचार सेमिनार का अनुभव

महाविद्यालय में तीन दिनों का सेमिनार सम्पन्न हुआ जिसमें सि0 अलमा ने हमें न केवल आचार बनाना सिखायी लेकिन फ़िनाइल, मोमबत्ती, कागज से फूल बनाना और मशरूम उगाना भी सिखायी। अपनी हर दिन की पढ़ाई के साथ-साथ इन सभी चीजों को जानना और सीखना हमारे लिए बहुत ही अच्छा अवसर था। सेमिनार के पहले दिन हमने मोमबत्ती और फ़िनाइल बनाना सीखा। दूसरे दिन आचार बनाके बहुत खुश थे। हम विभिन्न प्रकार के आचार बनाने की सामग्रियों को कॉलेज लेकर आए थे। इस दौरान मैं टमाटर का आचार बनाना सीखी। तीसरे दिन हमने आर्ट एण्ड क्राफ्ट में फूल बनाना सीखा।

इन तीन दिनों में मुझे लगा कि जो हम सीखे वे सभी चीजों का इस्तेमाल हम दैनिक जीवन में कहीं न कहीं रोज करते हैं। लेकिन इन्ही वस्तुओं को हम बहुत अधिक रूपये देकर बाजार से खरीदते हैं और यह सब व्यवसाय का अच्छा साधन भी है। यह सब सीखना बहुत लाभदायक था। इन तीन दिनों में कुछ बातें थीं जो मुझे लगता है कि इस सेमिनार में हम सब और भी बहुत कुछ सीख सकते थे। जैसे कि सेमिनार में मुझे कुछ भोलेंटियर के साथ मिलकर पहला दिन फ़िनाइल बनाने का मौका मिला। इसे अगर हम छोटे-छोटे दल में बनाते तो अधिक लोगों को फायदा मिलता। आचार बनाने के लिए हम काफी उत्साहित थे लेकिन हम वही सीख पाए जो बनाने के लिए दिया गया था। अगर हर दल के आचार को बनाते हुए देख पाते तो शायद हम सभी प्रकार का आचार बनाना सीख सकते थे।

आर्ट एण्ड क्राफ्ट में सीखे हुए फूलों की सुंदरता का पता तब चला, जब हमने उन फूलों से कॉलेज डे के लिए नोटिस बोर्ड को सजाया। सि0 अलमा के द्वारा जड़ी-बूटियों के बारे में भी जानकारी दी गयी। अपनी पढ़ाई से हटकर ज्ञान प्राप्त करना बहुत ही लाभदायक रहा।

अलका जोजो
प्रथम वर्ष 'अ'

विदाई समारोह

महाविद्यालय में विदाई समारोह पूरे महाविद्यालय, प्रथम वर्ष के सभी छात्र–छात्राओं और शिक्षकगण के लिए खुशी की बात और दुःख की बात दोनों एक साथ चल रही है, क्योंकि ये एक साल द्वितीय वर्ष के साथ कब खत्म हो गई पता ही नहीं चला। परीक्षा खत्म हुई कि नहीं अचानक एकदम से सब गायब हो गया। समझ नहीं आ रहा था हजारों यादें होंगी। ऐसा लगता था जैसे कल ही तो मिले थे। कुछ खालीपन सा महसूस हो रहा था क्योंकि द्वितीय वर्ष के साथ बिताए पल एक गोल्डन टाइम था जो हमने एक साथ गुजारे। पर ऐसा लगा जैसे अभी तो हमने अपनी आँखें खोल कर देखा ही था कि पल भर में सब गायब।

जिंदगी में ऐसे पल हर वक्त आते हैं पर ये पल बहुत अलग था। बस दुआ है, हम सभी PTEC परिवार की तरफ से, आप जहाँ भी रहो, खुश रहो और आपके हर कदम सफलता से पूर्ण रहे।

सुधीर ओड़ेया
द्वितीय वर्ष "B"

खट्टी–मीठी सी यादें

नए रास्ते खोजने को,
कुछ नया कर दिखाने को,
मंजिलों को अपना बनाने को,
थोड़े से नादान, थोड़े से समझदार,
परिंदे आज उड़ चले।

मिल बाँट कर जो खुशियाँ मनाते थे,
चुपके से हमारा टिफिन खा जाते थे,
वो हमको बहुत सताते थे,
वो हर चीज पर अपना हक जताते थे।

वो आपका डांटना, प्यार से समझाना,
छात्र शिक्षक बनकर पढ़ाना,
और स्कूलों में जाकर
शिक्षक की भूमिका निभाना,
हमें सिखाया ये बातें बहुत याद आएँगे।

आप सबका प्यार भरा साथ,
वो साथ बिताए पल,
खट्टी–मीठी सी यादें,
बहुत याद आएगी।

आज आँखों में आँसू तो हैं,
पर खुशी भी उतनी ही है,
क्योंकि आज हम भी,
जूनियर से सीनियर हो जाएंगे।

कॉलेज से तो विदा हो रहे हो आज
पर हमारे दिलों से नहीं,
आते–जाते मिलते जाना।

अंजली टोप्पो
द्वितीय वर्ष "B"

द्वितीय वर्ष का विदाई समारोह

किसी ने सही कहा है "आने वाला पल जाने वाला है।" दो साल का Teacher's Training शुरू में हमें बहुत लम्बा लगता है पर ये वक्त कब आके चला जाता है, ये हमें पता ही नहीं चलता। आज हमारे सीनियरस् का Farewell है। Farewell शब्द सुनते ही मन में एक उदासी सी छा जाती है। हमारे सीनियरस् के चेहरे पर भी ये उदासी झलक रही थी। उनके दिलों में भी यहाँ से जाने का गम था। गम अपने सहपाठियों से बिछड़ने का, गम रोज दिन अपने फेवरेट टीचर से न मिल पाने का, गम अपने जीवन का एक खूबसूरत लम्हा बीत जाने का। Farewell के दिन मैं अपने सहपाठियों को देखकर सोच रही थी कि सच में "कुछ दिन महीनों साल बाद हम भी दूर हो जाएंगे, मंजिलों की तलाश में हम पैर फैलाएंगे, किस्सों के पिटारों को लिए नए सफर पर जाएंगे। वो दोस्त मुझे हर दम, हर लम्हा याद आएंगे।

मनीषा टेटे
द्वितीय वर्ष "B"

एग्जाम का सीजन

एग्जाम का आया सीजन
अपना पाठ करो रिवीजन
मत करो कभी समय बर्बाद
समझो, लिखो तब करो याद
एग्जाम से तुम न घबराना
आत्मविश्वास बनाए रखना
सब अच्छे से हो परचे
तब सुखदायी होंगे नतीजे
कठिन मेहनत का परिणाम
अच्छे अंकों का इनाम
याद रखो सदा यह तुम
पढ़ाई से न जाना कभी दूर।

सोनाली एक्का
द्वितीय वर्ष "B"

सेमेस्टर एग्जाम

एग्जाम विद्यार्थी जीवन के लिए अपने आप को जाँचने का एक अच्छा माध्यम है। जिससे एक विद्यार्थी अपने–आप में पढ़ाई की जो त्रुटियाँ, कमियाँ हैं उसे जान पाता है और उन कमजोरियों तथा त्रुटियों को सुधारने की प्रेरणा मिलती है।

PTEC में हमारा सेमेस्टर एग्जाम सिलेबस के अनुसार सभी विषयों को पढ़ाया गया। उन्हीं में से हमने एग्जाम की तैयारी की। पढ़ने का मन तो नहीं कर रहा था, लेकिन कहा जाता है कि "विद्यार्थियों का दर्पण पुस्तक है और किया हुआ मेहनत कभी व्यर्थ नहीं होता"। मैं न चाहते हुए भी सुबह जल्दी उठकर सभी विषयों की पढ़ाई की और एग्जाम लिखी। इस प्रकार मेरे मेहनत का फल भी प्राप्त हुआ, पर मैं अपने प्राप्त अंकों से संतुष्ट नहीं हुई। मुझे लगने लगा कि थोड़ा और अच्छा से पढ़ाई की होती तो और ज्यादा अंकों से पास होती।

अनुरागिनी तिर्की
द्वितीय वर्ष "B"

गर्मी छुट्टी का अनुभव

After a long time, I had a long holiday from 11th May 2024. I was very much exited to go home to meet my parents and friends. I had planned so many things to do during my holidays. First of all, I got a chance to vote for the first time in my life.

After spending a few days at home, I went to Odisha for an excursion with my brother. I enjoyed a lot playing in water at the beach. I visited some tourist places like: the Sun temple, Puri Beach and Museum. I also tasted some new dishes which were amazingly delicious. I spent two weeks in Odisha and after that I came back home safe and sound.

Prashant Kullu
2nd Year "B"

गर्मी छुट्टी की सार्थकता

महाविद्यालय में करीब एक वर्ष का शिक्षण कार्य के पश्चात बढ़ती गर्मी के कारण हमारा महाविद्यालय लगभग 48–50 दिनों तक बंद रहा। इसी बीच छुट्टी में हुए कुछ अनुभवों को मैं साझा करना चाहता हूँ, जो इस प्रकार है:

गाँव–परिवार का वातावरण: छुट्टी होने के दूसरे दिन मैं हॉस्टेल छोड़कर अपने घर की ओर प्रस्थान कर रहा था, उस वक्त मेरे अंदर हॉस्टेल और कॉलेज की कुछ यादें सता रहा थी। क्योंकि मैं हॉस्टेल से निकलने के बाद धीरे–धीरे गाँव के करीब होता जा रहा था। गाँव पहुँचते ही परिवार के सभी सदस्यों, दोस्तों से मुलाकात करने के बाद मुझे खुशी तथा पारिवारिक प्रेम का अनुभव मिला। लम्बे समय के बाद परिवार से अपना प्यार मिला।

दिनचर्या में होने वाली परिघटनाएँ: घर पहुँचते ही पारिवारिक परिस्थिति को देखते हुए मैं रोजगार के रूप में कुछ काम करना शुरू किया। मैं ट्रैक्टर में बालू, पत्थर आदि ढुलाई का काम करने जाने लगा। प्रतिदिन सुबह से लेकर शाम तक काम करने लगा। मैं अपना सारा लज्जा एवं सुस्तीपन को त्याग, मेहनत करता रहा। अंततः 46 दिन मेहनत करके लगभग 22,500 रूपये इकट्ठा कर लिया, जिसे मैं कॉलेज खुलने पर 20,000 रूपये छात्रावास फीस के रूप में जमा कर पाया। इस दौरान मुझे बहुत सारे अनुभव प्राप्त हुए। उनमें से मुख्यतः हैं: मेहनत के वास्तविक महत्त्व का अंदाजा हुआ, प्रत्येक परिस्थिति में अपने–आप को सुव्यवस्थित रखने का अनुभव मिला, कार्य के प्रति सहनशीलता का अनुभव, जीवन में मेहनत के महत्त्व का अनुभव रहा।

सीख: परिस्थिति चाहे जैसा भी हो उसका सामना करना चाहिए। जीवन में अगर सफलता पाना हो, तो सारा आलसीपन और लज्जा को त्यागना पड़ता है। पारिवारिक कमजोरी को लेकर हुनर को छोटा नहीं समझना चाहिए। शिक्षण कार्य में मजबूती बनाए रखने के लिए पठन–पाठन कार्य के साथ–साथ अन्य रोजगार कार्य पर भी मेहनत करके अपना योगदान देने की आवश्यकता है।

प्रियाल मिंज
द्वितीय वर्ष "B"

गर्मी छुट्टी का अनुभव

Summer vacation, a period eagerly awaited by students across the world, is not merely a break from the academic routine but an image of opportunities. It's a time when the scorching sun bestows upon us the chance to plunge into a world of exploration, relaxation and learning beyond the confines of the classroom. The very thought of summer vacation fills our hearts with joy. It's a time when the rigidity of school schedules melts away, and the days stretch out like a lazy river, inviting us to swim in its possibilities. Students eagerly anticipate this break as it offers them a respite from exams, homework and the daily hustle of the school life.

Summer vacation is the golden opportunity for new experiences. It's the perfect time to travel, explore new places and immerge oneself in different cultures. It's an excellent opportunity to strengthen areas of academics without the pressure of imminent exams. It was a good and valuable time for me for reflection and personal growth. I also learnt to contemplate my personal goals, aspiration and values.

Susana Toppo
2nd Year "B"

परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताया

मेरे लिए गर्मी छुट्टी उतना आनंददायक नहीं रहा जितना कि मैं घर जाने के पहले सोच कर उत्साहित थी। हॉस्टेल से सोच कर गयी थी कि छुट्टी में खूब पढ़ाई करूंगी। लेकिन मुश्किल से पुस्तक खोल पायी।

घर में माँ की तबीयत खराब होने की वजह से उनकी सेवा करने में ही मेरा समय बीत जाता था। साथ ही, घर का सारा काम मुझे ही करना पड़ता था। बस एक बात से खुश थी कि इन परिस्थितियों के बहाने ही सही परिवार के सभी सदस्यों से मिलने एवं समय बिताने का अवसर मिला।

शांति मुर्मू
द्वितीय वर्ष "B"

The freshers' day 2024

Today was the day of joy because all the 1st year students were welcomed. It was really a very joyful day and I hope all the students of PTEC might have enjoyed and felt oneness in PTEC. The 2nd year students put a batch on all the first-year students. Then the first-year students were taken to the multipurpose hall by singing a song. The principal gave a short speech and welcomed the 1st year and encouraged them to be happy in all the activities of the PTEC. We were welcomed by one beautiful welcome song. Prayer dance and many other programmes were there which made us feel very happy, joyful and encouraged to begin our classes with great zeal and hope.

जोसफिन मरांडी
प्रथम वर्ष "B"

Freshers'Day का अनुभव

मेरे लिए बहुत ही रोमांचक रहा। चाहे वह हमारा वेलकम हो या हमारा फुटबॉल मैच। ऐसा पहले भी मेरे साथ हो चुका था पर स्वागत के साथ फुटबॉल मैच का आयोजन यह मुझे व्यक्तिगत् रूप से बेहद अनोखा और हर्षोल्लास भरा लगा। फुटबॉल मैच के बारे में मुझे लग रहा था कि हमलोग हार जाएँगे, पर ऐसा नहीं हुआ। यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी, क्योंकि हमारे सीनियर ने हमें बताया था कि पिछले बार वे लोग मैच जीते थे। तो मुझे भी लग रहा था कि हमलोग हार ही जाएंगे। पर ऐसा हुआ नहीं। मैच 1–1 की बराबरी पर समाप्त हुआ। वह दिन मुझे जीवनभर स्मरण रहेगा।

अनिश कुमार पासवान
प्रथम वर्ष "B"

कॉलेज का पहला दिन

यह दिन मेरे जीवन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिन था क्योंकि मेरे जीवन का जो लक्ष्य है उसकी ओर पहला कदम था। इस दिन का इंतजार मैंने बड़ी ही बेसब्री से किया था। मेरे मन में सुबह से ही एक जोष, उमंग और थोड़ी घबराहट थी। मन में कई प्रश्न उठ रहे थे कि आज का पहला दिन कैसा होगा? कौन–कौन से क्रियाकलाप होंगे? उन क्रियाकलापों को मैं अच्छे से कर पाऊंगी या नहीं? इन सभी मनोभावों के साथ मैंने कॉलेज में प्रवेश किया। कॉलेज का प्रथम दिन की शुरूआत प्रार्थना सभा से की गयी। प्रार्थना सभा के बाद मुझे ऐसा लगा कि मन में जो घबराहट थी वह छू मंतर हो गयी। बाद में फा. रंजीत मरांडी के द्वारा प्रेरणादायक बातों, शिक्षक जीवन का उद्देश्य, शिक्षक के कार्य और एक अच्छा शिक्षक क्या होता है, इनके बारे में सुनने और सीखने का अवसर मिला। शिक्षक जीवन एक बुलाहट है। यह बात मेरे मन को छू गई क्योंकि मैंने अपनी इस बुलाहट को पहचाना और मैंने दृढ़ संकल्प किया कि मैं अपने शिक्षक जीवन को बच्चों के लिए पूर्ण रूप से समर्पित करूँगी और एक आदर्श शिक्षिका बनूँगी।

अनुजा नेहा पन्ना
प्रथम वर्ष "B"

हॉस्टेल का पहला दिन

बेसब्री से इंतजार के बाद मेरे जीवन में वो दिन आ ही गया जिसकी मैं सोते–जागते काम करते उन ख्यालों में खोई रहती थी कि वह कब आएगा और उस दिन का क्या मौसम होगा? कैसे जाऊंगी? क्या करना होगा? क्या मैं वहाँ होने वाली क्रिया–कलापों को कर सकती हूँ या नहीं? अनेकों इस तरह के सवालों से घिरी 5–6 घण्टों की सफर के बाद अपने सपनों के संकीर्ण रास्ते में चल पड़े वो दिन था 1 जुलाई 2024। यह पहला दिन बेचैनी से भरा था, थोड़ी खुशी, थोड़ा गम के अनुभवों से हर एक नयी चीजों को मैं अनुकरण करने की कोशिश में लगी रही। इन्हीं नयी चीजों के साथ शाम ढल गई और संध्या समय में अनेकों नए चेहरों से मुलाकात करने का मौका मिला। जिनसे मिलकर आनन्दमय माहौल लगने लगा। लेकिन भीड़ में खुद को व्यवस्थित करना बहुत कठिन होने लगा था। मेरे मन में चल रहे हजारों सवालों के उथल–पुथल विचारों को एक सवाल ने एकदम रोक डाला, वो प्रश्न है– मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से हूँ? मैं अकेले कुछ मिनटों के लिए बालकॉनी में बैठी और ठण्डी हवा के झोकों के साथ खुद को शांत किया और अपने शयन–कक्ष में मैं जाकर लेट गई। इन्हीं सवालों के साथ करवट लेती रही और अंततः मैं निद्रा देवी की गोद में सो गयी।

रोस केरकेट्टा
प्रथम वर्ष "A"

हॉस्टल का पहला दिन

First day of my hostel life

On the 1st of July 2024, I joined PTEC hostel. I had mixed feelings inside me. Because it was my first experience of the hostel life. When I reached here, I felt little bit nervous because I was new here and had no friends. I was nervous thinking how I would manage myself over here. When others came then I felt little better. On the second day, I made some friends and soon I adjusted myself. So, this was my little experience of my first day in the hostel.

John Ronald Kongari
1st year "A"

दूसरों का जीवन निर्माण शिक्षक का परम कर्त्तव्य

''पवित्र मिस्सा को खीस्तीयों के धार्मिक अनुष्ठान के अनुसार यह सभी आशीषों एवं कृपाओं का केन्द्र बिन्दु है।''

When you are happy you enjoy the music but when you are sad you understand the lyrics.

इस वर्ष, सत्र 2024–26 की शुरूआत पवित्र आत्मा के मिस्सा से किया गया। प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के लिए आज का दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। वे बहुत उत्सुकता से कॉलेज में आये थे। कुछ लोग बहुत खुश नजर आ रहे थे तो कुछ चिंतित थे कि क्या होने वाला है? सभी स्टाफ और द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थी नये सत्र को शुरू करने के लिए उत्साहित थे। इन्हीं भावनाओं के साथ मिस्सा में हमने सक्रिय रूप से भाग लिया।

पवित्र मिस्सा में फा. फिलमोन तिर्की ने बहुत ही प्रभावाशाली संदेश देकर हमें प्रभावित किया। उन्होंने बाईबल के वचनों के आधार पर ''बीज बोने वाले का दृष्टान्त'' को बताया कि कुछ बीज कंटीली झाड़ियों पर गिरे, कुछ रास्ते के किनारे और कुछ बीज अच्छी भूमि पर। जो बीज अच्छी भूमि पर गिरे वे कोई साठ गुणा, कोई सत्तर गुणा और सौ गुणा फल लाये। एक टीचर बनकर हमें भी फल उत्पन्न करना चाहिए। हम सभी अच्छी भूमि पर गिरे हुए बीज के समान हैं ताकि हम सही समय पर फल उत्पन्न कर सकें। दूसरों का जीवन निर्माण करना हमारा परमकर्त्तव्य है।

दूसरी ओर, मुझे और हम सभी को जीवन में आने वाले संघर्षों एवं चुनौतियों से लड़कर जीवन में हमेशा आगे की ओर बढ़ते रहने की आवश्यकता है। जब हम आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं तब कई समस्याएँ सामने आती हैं। उस समय पवित्र आत्मा हमारे सहायक के रूप में कार्य करता है। हममें पवित्र आत्मा के सातों वरदानों को समाहित करने की आवश्यकता है।

अलबीना कन्डुलना
द्वितीय वर्ष "B"

छात्रावास का अनुभव

मैं जब घर से छात्रावास पहुँचा, तो मुझे यहाँ का सुंदर परिसर देखकर बहुत अच्छा लगा। छात्रावास परिसर बहुत ही साफ–सुथरा था। मुझे अनुभव हुआ कि यहाँ रहना मेरे लिए लाभप्रद एवं षिक्षाप्रद होगा। जैसे ही छात्रावास में प्रवेष किया, तब हमारे द्वितीय वर्ष के प्रषिक्षणार्थियों ने मेरे सामानों को उचित जगह पहुँचाने में मदद किया। इससे मुझे अनुभव हुआ यहाँ सहयोग की भावना है, जो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं अपने कमरे में गया तथा थोड़ा आराम करने के बाद मुझे घर की याद आयी। मेरा मन थोड़ा उदास सा हो गया। मैं सोच रहा था कि मैं यहाँ रह पाऊँगा या नहीं। ये बात मुझे सताने लगी थी। कुछ देर में ही कुछ और प्रशिक्षणार्थियों का आगमन हुआ। उनसे मुलाकात करते हुए अपना–अपना परिचय हुआ। तब मुझे एहसास हुआ कि जीवन में कुछ पाना या करना है तो त्याग की भावना होना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए अब मैं लक्ष्य को केन्द्रित करते हुए छात्रावास में रहकर अपनी पूरी लगन, निष्ठा के साथ कर्त्तव्य का पालन करूंगा, ऐसी भावना उमड़ पड़ी। छात्रावास भी परिवार की तरह ही है जहाँ एक–दूसरे के प्रति सहयोग, प्रेम की भावना है। मैं अपनी जिंदगी में कभी भी छात्रावास में नहीं रहा इसलिए मुझे शुरूआत में अटपटा–सा लग रहा था, क्योंकि यहाँ अलग–अलग क्षेत्र, समुदाय से प्रशिक्षणार्थी आए हैं। एक–दूसरे से संबंध स्थापित करने में थोड़ा समय लगा। अब मैं लगभग सभों से परिचित हो गया हूँ, इसलिए अब मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ।

हॉस्टल लीडर का अनुभव

जब इस महाविद्यालय में मेरा नामांकन हुआ तो मैं बहुत खुश थी लेकिन कुछ आर्थिक कारणों को लेकर दुखित थी। हॉस्टल लीडर के रूप में मेरा अनुभव उस समय की देन है जब हमारे सीनियर शैक्षिक भ्रमण के लिए गए थे। उस दौरान मुझे हॉस्टल लीडर रखा गया। मुझे तो लगा कि ये क्या हो रहा है। थोड़ा मुश्किल था, परंतु कहते हैं न जो होता है अच्छे के लिए होता है। मुझे इस काबिल समझा गया। उसी दौरान हमारी हॉस्टल अधीक्षिका कुछ दिनों के लिए अनुपस्थित थीं, उस वक्त मुझे यह सोचकर बहुत डर लग रहा था कि कैसे पूरे हॉस्टल को संभालूँगी, जो मेरे बस कि बात नहीं थी। लेकिन सभी के सहयोग से अच्छी तरह समय बीत गया। हॉस्टल अधीक्षिका के साथ-साथ हमारे सीनियर्स भी वापस आ गए और मैंने राहत की सांस ली। मैं बहुत खुश थी अपने कामों से, ईश्वर को धन्यवाद।

नोशीला कुमारी
प्रथम वर्ष 'ब'

सिगिन मुंडा
प्रथम वर्ष "A"

हॉस्टल अनुभव

शुरुआती दिनों में यहाँ के नियम-कानून जानकार घबराहट हो रही थी। परंतु रहते-रहते सब ठीक हो गया। समय पर सभी कार्य होते हैं जिससे कि सभी लोग सक्रिय बने रहते हैं। सभी एक-दूसरे की मदद करते हैं। हॉस्टल का यह मेरा पहला अनुभव रहा है। मैंने पाया कि प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों को द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों से बहुत सारी नई-नई चीजें सीखने को मिलती हैं। दैनिक मिस्सा के समय आगे जाने का मौका मिलता है जिससे हमारे अंदर में निहित डर को भगाने में सक्षम होते हैं। मुझे हॉस्टल भी एक परिवार की तरह ही लगा। सभी का एक साथ मिलजुल कर कार्य करना, एक साथ बैठना, सूचना प्राप्त करना, परिचित होना, ये सब मुझे पारिवारिक माहौल का एहसास कराता था।

अविरल तोपनो
प्रथम वर्ष 'ब'

हॉस्टल अनुभव

जब मुझे पता चला कि हॉस्टल में रहना है तो मुझे बहुत हिचकिचाहट हो रही थी। इस बात को लेकर बहुत ही चिंतित थी कि मैं कैसे इतनी सारी लड़कियों के बीच रह पाऊँगी और कैसे बात करूँगी। शोरगुल में रहना मुझे पसंद नहीं। साथ ही, हॉस्टल के नियम-कानून को लेकर उसके अनुसार चलना मेरे लिए बहुत ही कठिन था। पानी, बिजली की समस्या को लेकर मैं बहुत परेशान थी कि दो बाल्टी पानी से कैसे नहाया करूँगी। लेकिन धीरे-धीरे वक्त के साथ-साथ बहुत कुछ बादल गया। सभों के साथ रहते-रहते उनके अनुसार अपने आप को ढालने का प्रयास किया और सभी से बात करने, मिलने-जुलने और सभी कार्यों को करने में दिलचस्पी ली। हॉस्टल में रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा और सीखने में मुझे बहुत आनंद आया। हॉस्टल का अनुभव मेरे लिए आगे भी मदद देगा और मैं इस अनुभव से बहुत खुश हूँ।

समीरा टेटे
प्रथम वर्ष 'ब'

विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य

जीवन में हर कष्टों का सामना करो
प्राप्त करो जीवन में अपना लक्ष्य
अपने अवगुणों, आलस्यों को दूर करो
अपने जीवन में आगे बढ़ो॥

जीवन में बहुत खट्टे-मीठे अनुभव मिलेंगे
चाहे वो सुख की हो या दुख की
पर अपना लक्ष्य कभी न भूलो

जिंदगी में माता-पिता
भाई-बहन बस साथ देंगे
पर अपना लक्ष्य तक पहुँचना
अपना कार्य है॥

आत्मविश्वास बढ़ाओ, आशावादी बनो
सीखते रहो, दूसरों की मदद करो
सफलता-असफलता को स्वीकार करो
अपने जीवन में लक्ष्य की ओर बढ़ते रहो॥

रुफिना सुरीन
प्रथम वर्ष 'अ'

हॉस्टल अनुभव

जब मेरे माता-पिता मुझे हॉस्टल छोड़ने आए, जब तक वे थे तब तक तो ठीक था, परंतु जब वे छोड़कर जाने लगे तो मैं बहुत मायूस हो गयी। और तो और मैं एक सप्ताह तक रोती रही, क्योंकि मुझे घर की याद आ रही थी। धीरे-धीरे समय बीतता गया और काफी सारे दोस्त बन गए। दोस्तों के साथ रहना अच्छा लगने लगा। फिर चार महीनों बाद घर जाने की बात आयी तो खुशी से रात भर नहीं सोयी। घर पर अपने माता-पिता को बैठकर हॉस्टल जीवन के बारे अपने अनुभवों को साझा किया। हर समय घर में मेरे अनुभवों को सुनते-सुनते सभी ऊब जाते थे।

छुट्टी के बाद जब वापस आयी तो फिर घर की चिंता सताने लगी। पर समय के साथ चलने का मैंने भी मन बना लिया। अब हॉस्टल के प्रति मेरा लगाव बढ़ रहा है। मैं हॉस्टल में अनेक प्रकार के कार्य जैसे- सुबह जल्दी उठना, अपने कार्य सही समय पर कर कॉलेज पहुँचना, कॉलेज से लौटने के बाद बागवानी करना आदि सीख रही हूँ। अब मुझे हॉस्टल में परिवार सा महसूस होता है।

करिश्मा लकड़ा
प्रथम वर्ष 'ब'

"मुर्दा कल्याण एवं रोटी बैंक" : a mission

I was inspired by the words and thoughts of Md. Khalid to help the needy people. His thoughts are very different from others. He does the charity work to help the people. He buries/cremates the abandoned dead bodies of different religions according to their rituals. He feeds the hungry by Roti Bank. He cares for the poor by getting donations. By his work I learnt that I have to help others, I have to be strong in my life, should have self-confidence, strong mindset, be truthful and passionate in my work.

Prince Kujur
First year "A"

"लोग क्या सोचेंगे" सोचकर पीछे नहीं हटना

मो. खालिद के अनुभवों को सुनकर मुझे बहुत अजीब और आसाधारण सा लगा। जब कोई इंसान या व्यक्ति अपनी अंतर–आत्मा को सुनता है और उसको करके दिखाता है तो वह महान बनता है। उन्ही में से एक मो. खालिद भी हैं। जिस काम को समाज हीन या घृणा की दृष्टि से देखता है, उसका नाम उन्होंने दिया 'कल्याण'।

मुर्दा कल्याण के बारे सुनकर मुझे अजीब इसलिए लगा क्योंकि मैं इन सब बातों एवं कामों से अपरिचित थी। मैंने समाजसेवक मो. खालिद की बातों को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना और मन में उनके प्रति आदर और सम्मान की भावना जगी। जब उनके अनुभव (रिम्स राँची, 2010) को सुनी तो बहुत ही बुरा लगा। जब मनुष्य जिंदा रहता है तो वह अपनों के लिए सबकुछ करता है, पर जब मर जाता है तो उसका कोई नहीं। ऐसे लोगों को मान–सम्मान के साथ दफनाने या जलाने वाले मो. खालिद की मैं बहुत आभारी हूँ। उनकी बातों से मैं बहुत ही प्रेरित हुई जो निम्न प्रकार है–

- ❖ जो भी काम हो, मुझे लगन के साथ करना है।
- ❖ लोग तिरस्कार करेंगे, लेकिन काम को करते रहना है।
- ❖ जहाँ हम अच्छा कर सकते हैं या सेवा दे सकते हैं, अवश्य देना है।
- ❖ लोग क्या सोचेंगे सोचकर पीछे नहीं हटना है।
- ❖ उनकी बातों को सुनकर मुझमें भी मदद की भावना जगी।

निर्मला दिग्गी
प्रथम वर्ष "A"

संत इग्नासियुस लोयोला का पर्व दिन

संत इग्नासियुस लोयोला के पर्व पर मुझे इसलिए खुशी होती है क्योंकि उनके महान कार्य, जीवन की सार्थकता और आध्यात्मिक जीवन की सार्थकता पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है। हम मनुष्य को पृथ्वी पर रहने वाले जीव–जन्तु, ईश्वर की सृष्टि, वस्तुओं के प्रति ईश्वरीय दृष्टिकोण और उनमें ईश्वर की छवि देखने के लिए प्रेरित करता है।

उनका जीवन वृतान्त हमें एक सीख देता है कि हमें अपने जीवन को किस प्रकार सुन्दर बनाना है। वह हमेशा मुझे याद दिलाता है कि मानव जीवन का मकसद ईश्वर की स्तुति, आदर और सेवा करने के लिए हुई है। जिसके कारण मुझे एक मकसद मिल जाता है जो मैं उसके अनुसार अपने जीवन को जीने का प्रयास करता हूँ।

इस तरह से इस पर्व के अवसर पर मुझे बहुत खुशी का अनुभव हुआ। इस साल हमारे पड़ोसी विद्यालय की भागीदारी ने खुशी में चार चाँद लगा दिया।

सुधीर ओड़ेया
द्वितीय वर्ष "B"

कम समय में ही अधिक आनंद लिया

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमलोगों ने 31 जुलाई को संत इग्नासियुस लोयोला का पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाया। लेकिन इस वर्ष पर्व मनाने का अंदाज बहुत ही अलग था। नया स्थान, नया कॉलेज तथा दोस्तों के साथ बहुत ही खुशी के साथ पर्व को मनाया। यह पर्व कई यादगार पलों में से एक रहा।

यह कार्यक्रम मिस्सा–बलिदान के द्वारा प्रारंभ हुआ। यह बहुत ही अच्छा रहा। मिस्सा के आरंभ में लोयोला की संक्षिप्त जीवनी बतायी गई तथा मिस्सा का उपदेश भी बहुत अच्छा रहा। गायक मंडली में एक से बढ़कर एक गायक होने के कारण उन्होंने अपनी मधुर वाणी से मिस्सा को भक्तिमय बनाया।

मिस्सा पूजा समाप्त होने के बाद नास्ता की व्यवस्था थी। नास्ता करने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम था। सांस्कृतिक कार्यक्रम छोटा था लेकिन कहा जाता है न short and sweet ठीक उसी तरह हमारा कार्यक्रम रहा। छोटे से बड़े सभी अपनी कला का प्रदर्शन करते नजर आये। यही वजह रहा कि वाह–वाही की आवाज पूरे सभागार में गूँज रही थी।

जिन लोगों को मंच में मौका नहीं मिला वे अपनी खुशी का प्रदर्शन सामूहिक नाच के द्वारा प्रकट किये। नाचने का समय सीमित था, लेकिन प्रशिक्षणार्थी कम समय में अधिक आनंद लेना अच्छी तरह जानते हैं।

अंत में हमारा भोजन का कार्यक्रम था। इसकी व्यवस्था boys hostel में की गयी थी। जिसमें हमें स्वादिष्ट भोजन कराया गया। सभी ने अच्छे से भोजन का लुफ्त उठाया।

निष्कर्ष के रूप में मैं यह कह सकता हूँ कि इस पर्व को मनाने के लिए सभी अपने–अपने स्तर से बहुत मेहनत किये। जिसके फलस्वरूप हमारा सारा कार्यक्रम सुव्यवस्थित तथा सफल रहा। जिन लोगों को अपना कार्यभार सौंपा गया था, वे ईमानदारी, मेहनत तथा लगनता से अपना कर्त्तव्य समझकर कार्यों को पूरा किये।

अरनेस्ट भेंगरा
प्रथम वर्ष "A"

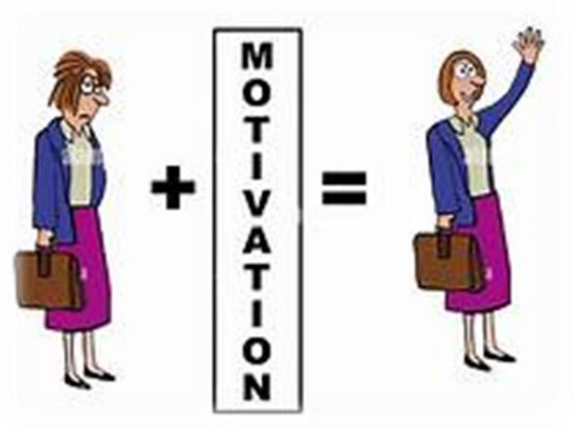

"सच्ची शिक्षा वही है जो मन, दिल और शरीर का विकास करता है"

महाविद्यालय में "व्यक्तित्व विकास" विषय पर एक सेमिनार सम्पन्न हुआ, जिसके वक्ता थे फा. लॉरेंस। उन्होंने अपने वक्तव्य में हमे एक आदर्श शिक्षक बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हमारे अंदर छुपे प्रतिभा एवं क्षमताओं को बाहर उजागर करने तथा जागरूक होने के लिए रास्ता दिखाया।

उनके वक्तव्य से मिले विचारों को मैं निम्न विन्दुओं के रूप में साझा करना चाहता हूँ–

1. एक शिक्षक को बच्चों के मन को पढ़ने की ज्योति बनना है।
2. शिक्षक को सबसे पहले स्वयं प्रकाश की तरह उजाला बनना है जिससे कि वह दूसरों को भी प्रकाश दे सके।
3. एक शिक्षक को हमेशा सच्चा मार्गदर्शक बनना है। साथ ही, ऐसा शिक्षक बनना है जो दूसरों के लिए सबसे अच्छा प्रेरणा स्रोत का कारण या वजह बन सके।
4. शिक्षक को दूसरों या बच्चों के सामने एक अच्छा नमूना या उदाहरण बनना है, जिससे कि वे प्रेरित हो सकें।

महात्मा गाँधी का कथन मुझे सबसे ज्यादा प्रेरित किया, और वो है– "यदि हम दूसरों में बदलाव देखना चाहते हैं, तो स्वयं को सबसे पहले बदलना होगा।"

रोशन केरकेट्टा
द्वितीय वर्ष "A"

धान रोपनी

बहुत दिनों के बाद आया वो दिन
जहां हम निकले खेत पर
खेतों के चारों ओर लहलहाती
बीड़ा की हरियाली॥

रिमझिम-रिमझिम बारिश करता
फिर भी पीछे न हटता
खेतों में बीड़ा लेकर
चले हम धान रोपने॥

एक तरफ बीड़ा उखाड़ते
दूसरी तरफ बीड़ा ढोते
हम सभी उत्साह भरे मनोभाव में
दल-दल में काम करते॥

खूब गाना गाये
मनोरंजन का यह समय था
चार दलों में विभाजित
रोपने का मजा कुछ और था॥

एकता में बल था
प्रशिक्षण का समय था
एक-दूसरे का सहयोग था
सीखने का सुनहरा मौका था॥

अनिता मिंज
प्रथम वर्ष 'अ'

रोपनी कार्य में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया

रोपनी कार्य मेरे लिए बहुत ही मुश्किल था, क्योंकि मैंने पहले अपने जीवन में इस कार्य को नहीं किया था। मैं प्राचार्य को इसके लिए धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे इस कार्य को सीखने के अवसर बनाया और मैंने इसे स्वेच्छा से स्वीकार किया। साथ ही, बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

शुरूआत में मैं बहुत धीरे–धीरे रोप रहा था। बाद में मेरे कार्य में गति आ गया। तब मुझको एहसास हुआ कि मैं रोपनी कार्य अच्छी तरह से कर सकता हूँ। इस कार्य के माध्यम से मैंने सीखा कि किसी भी बड़े कार्य को करने के लिए हमें एक समूह में होना आवश्यक है। जब हम किसी कार्य को एक साथ करते हैं तो वह कार्य हमारे लिए बहुत आसान व सरल हो जाता है तथा कार्य में हमें आनन्द, खुशी और चैन मिलता है।

विल्सन खेस
प्रथम वर्ष "A"

धान रोपनी

रोपनी कार्य में कॉलेज के सभी विद्यार्थी एवं व्याख्यातागण मिलजुल कर एवं बढ़–चढ़कर भाग लिए। यह देखकर मन उल्लास से भर गया। एक साथ लगभग 200 लोग रोपनी कार्य में लगे थे। जिससे काम इतना जल्दी खत्म हो गया कि कार्य करने का एहसास तक नहीं हुआ। सब हँसते, गाते कार्य कर रहे थे। थकान का भी पता नहीं चला। गाना गाते–गाते एवं मस्ती करते काम हुआ। काम में ऐसा आनंद मिला जो पहले कभी नहीं एहसास हुआ था।

जेवियर भेंगरा
प्रथम वर्ष 'अ'

आखिर शिकायत है क्यों?

शिकायत क्यों?
तू निकल जरा और देख उन गलियों में,
जहां वे जी रहे सड़क की गंदी नालियों में।

शिकायत क्यों?
कि आज की रोटी है जली,
तू देख जरा वो आधी पाँव रोटी कहाँ है पड़ी।

शिकायत क्यों?
कि मुझे कंबल है आधे पड़े,
तू सोच जरा कैसे वो खाली बदन जमीं में है पड़े।

शिकायत क्यों?
कि छत से पानी है गिरते,
तू सोच उनको जो सड़क के किनारे हैं जीते।

शिकायत क्यों?
कि मेरे पास है नहीं कपड़े,
तू देख कैसे वो खुश हैं पहने फटे सिकुड़े।
शिकायत क्यों?

कि मैं हूँ नहीं सुंदर,
तू तलाश खूबसूरती अपने अंदर।
आखिर शिकायत है क्यों?

रिया रीतिका हेम्ब्रोम
प्रथम वर्ष 'ब'

आज नहीं तो कल

आज नहीं तो कल
माना कि अनमोल है जीवन का एक-एक पल
मेरे सपने पूरे होंगे आज नहीं तो कल
जरूरत है एक आशा की
जरूरत है आत्मविश्वास की
है जरूरत मेहनत और ईमानदारी की
माना कि डगर कठिन है,
पर दिखाऊँगी उन पर चल,
मेरे सपने होंगे पूरे,
आज नहीं तो कल।

मेहनत से आसमां झुका सकते हैं हम
हिम्मत से चलें तो मंजिल पा सकते हैं हम
क्या हमें फिर रोकेगा जमाना,
तारों की तरह झिलमिला सकते हैं हम।

माना कि आर्थिक रुकावटें हैं,
पर मन में विश्वास हो अटल।
मेरे सपने पूरे होंगे आज नहीं तो कल।
माना विवशता घेरे है,
पर मन में हौसला हो हर पल,
मेरे सपने पूरे होंगे आज नहीं तो कल।

आभा तिर्की
द्वितीय वर्ष 'अ'

विश्व आदिवासी दिवस का महत्त्व

विश्व आदिवासी दिवस हर साल 9 अगस्त को मनाया जाता है। दुनिया में मूल आबादी के अधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन विशिष्ट संस्कृतियो, भाषाओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक योगदानों का सम्मान करने का प्रयास करता है। यह मूल आबादी द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाईयों और समस्याओं जैसे– भूमि अधिकार, सांस्कृतिक संरक्षण, पूर्वाग्रह हाशिए पर होना और सामाजिक जागरूकता फैलाने का अवसर प्रदान करता है।

आज दुनिया भर के करीब 90 से भी अधिक देशों में आदिवासी निवास करते हैं। विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। अधिक आबादी होने के बावजूद आदिवासियों को कई बार अपने सम्मान और अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आदिवासियों की इसी अवस्था को देखते हुए, उनके अधिकारों और अस्तित्व के संरक्षण के लिए इस दिन को खासतौर पर मनाया जाता है।

नीलकुसुम एक्का
द्वितीय वर्ष "A"

मुझे गर्व है कि मैं एक आदिवासी हूँ

आदिवासी आबादी के अधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी सुरक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। इसकी स्थापना 9 अगस्त 1994 ई. को जेनेवा में हुई।

हमारे महाविद्यालय में आदिवासी दिवस मनाया गया। जिसमें विभिन्न आदिवासी समूहों के द्वारा अपने–अपने रीति–रिवाजों के अनुसार नृत्य प्रस्तुत किया गया। जिसमें मुख्यतः थे– कुडुख, मुण्डा, संथाली और खड़िया। मैं असुर जाति से हूँ और मेरे जाति से सिर्फ दो लोग हैं। इसलिए अपने जाति के अनुसार नाच के लिए दल नहीं बना। अतः मैं खड़िया समुदाय में शामिल हो गई और उनका नाच सीखा। इनका नाचना–गाना अपने खड़िया रीति–रिवाज के अनुसार हुआ और देखने में भी बहुत सुन्दर रहा। मुझे तो इस प्रकार से देखकर अपने पूर्वजों की याद आने लगी थी। आदिवासी दिवस मनाकर मैं गर्व महसूस कर रही थी क्योंकि मैं भी एक आदिवासी हूँ।

शीला असुर
द्वितीय वर्ष "A"

वीरों और देशभक्तों को याद किया

सुधीर ओड़ेया
द्वितीय वर्ष "B"

15 अगस्त को पूरा भारत स्वतंत्रता दिवस के जश्न को पूरे जोर–शोर से मना रहा था। हम भी हमारे महाविद्यालय में इस जश्न का लुफ्त उठा रहे थे।

इस दिन को यादगार बनाने के लिए और अपने अन्दर पनप रहे खुशी और देशभक्ति को हमने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा प्रकट करने का प्रयास किया। हमने उन वीरों और देशभक्तों को याद किया जो हमारे देश की शान है, मान है। आज हमें वो शान और मान देखने को नहीं मिलता है क्योंकि आज की परिस्थिति में बस जात–पात, अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ बनाने की होड़, गरीबी की मार, अमीरी की अकड़, भ्रष्टाचार और अन्य बुराईयाँ ही देखने को मिलती हैं। सवाल यह है कि हम कैसे कह सकते हैं कि आजादी या स्वतंत्रता का हम महोत्सव मना रहे हैं। हमें भारतीय होने का गर्व है, पर आज के समय में परिस्थिति को देखते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि गुलामी क्या थी ये हम क्या जाने, हमने तो हमेशा आजादी में ही सांस ली है। गुलामी क्या है– ये वो ही जाने यो बतायेंगे, जिन्होंने आजादी की कुर्बानी दी है।

बालिका दिवस

श्रीमती डोली लकड़ा

24 जनवरी 1966 का वह दिन जब स्वतंत्र भारत में तीसरे प्रधानमंत्री के रूप में सशक्त महिला इन्दिरा गांधी ने शपथ ग्रहण किया। एक पुरुष प्रधान देश में इस उच्च पद में एक महिला का सम्मान पाना निसंदेह एक राष्ट्रीय दिवस के रूप में था। इसी दिन को समर्पित करने हेतु राष्ट्रीय बालिका दिवस की शुरुआत की गई।

थीम 2025 – "सुनहरे भविष्य के लिए बच्चियों का सशक्तिकरण"

यह सशक्तिकरण लैंगिक समानता, स्वतन्त्रता एवं अवसरों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक, राजनीतिक जैसे चिंतनशील मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। आधुनिक भारत में कई महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा उच्च पदों पर आसीन हुई हैं। हालांकि कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं।

ये युवा वर्ग चाहे लड़का हो या लड़की, कल के भविष्य हैं। एक बीज जब तक वो जमीन में दबा हुआ है, अपनी वास्तविकता से अनभिज्ञ होता है कि पौधे बनने पर उसकी परवरिश कैसी होगी? राष्ट्र निर्माण में जितनी भागीदारी एक बालिका की है, उतनी ही जागरूकता एक बालक में होनी जरूरी है। ये वही युवा वर्ग है जिनके दिलों दिमाग में अतीत सुसुप्तवस्था में है, जिनकी हर अवस्था में वो नित्य नए अनुभव ग्रहण कर रहा है, यही है वो जिनके कदमों तले भविष्य के अदृश्य बीज पनप रहे हैं। इसलिए बात चाहे बालिका दिवस, महिला दिवस या महिला सशक्तिकरण की हो, निसंदेह यह हर पुरुष वर्ग को संदेश देता है की बालिकाएँ तथा महिलाएं तभी सशक्त होंगी, जब उन्हें लैंगिक समानता का अधिकार प्राप्त होगा।

एक बालिका बचपन से पचपन होने के क्रम में परिवार के उत्तरदायित्वों के प्रति हमेशा सजग रहती है। सहस्त्र शक्तियों को समेटे वो समाज, परिवार तथा कार्यस्थल सभी जगह अपनी कर्मठता से अपने वजूद को स्थिरता देने का प्रयास करती है। गायिका मेघनांशी सिंह –

'सुन भारत की नारी
तू मत बनना बेचारी
हार मान न लेना तू
तेरी जंग अभी है जारी'

निश्चय ही हमें यह जंग लड़ना है अपने अधिकारों के लिए, सम्मान के लिए। हम नारी कोई कठपुतली नहीं जो बंधी डोरी से जिंदगी भर नाचते रहें। आज की नारी खुले आसमान में स्वच्छंद विचारों एवं मर्यादाओं में रह कर राष्ट्र निर्माण में कदम से कदम मिलाना चाहती हैं।

नववर्ष 2025

न्यू ईयर एक ऐसा समय होता है जब हम अपने पुराने साल को अलविदा कह देते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं। यह एक ऐसा समय होता है जब हम अपने जीवन में नए बदलाव लाने की कोशिश करते हैं और साथ ही अपने सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत और ईमानदारी और उत्साह के साथ आगे बढ़ते हैं। मैंने अपने न्यू ईयर का जश्न अपने परिवार और दोस्तों का साथ मनाया। हम सभों नें ढेर सारी मस्ती की और एक साथ नए साल का स्वागत किया। हमने साथ में खाना खाया और गानों का आनंद लिया। साथ ही मजाक और हंसी के पल बिताए। मैंने अपने स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित किया और अपने जीवन में अधिक सकारात्मकता और खुशी लाने की कोशिश की। क्योंकि जो बीत गया है उसे पीछे मुड़ कर देखने से फायदा नहीं है। इसलिए 2025 में बीते हुए दिनों को याद न करके आगे के जीवन में होने वाले कार्यक्रमों के लिए खुद को तैयार करना है।

अलिशा बड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

नया साल का अनुभव

नया साल 2025 मेरे लिए बहुत ही सुंदर और खास था। क्योंकि हर नया साल हरेक व्यक्ति को नई एवं उन्नति की दिशा की ओर ले जाता है। यह मेरे लिए भी कुछ ऐसा ही था क्योंकि इस नए साल का मुझे बेसब्री से इंतजार था और आखिर वो दिन आ ही गया था। सबसे पहले मैं मेरे माता-पिता को नए साल की शुभकामनायें दी, फिर अन्य लोगों को। नया साल में प्रवेश करते ही मुझमें एक अलग सा उमंग और जोश आ गया और मैं यह ठान ली कि मैं मेरे व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन लाऊँगी और बीते सालों में जो भी काम अच्छा से नहीं की उसे मैं इस साल सबसे अच्छा करूंगी और जो अच्छा था उसे आगे भी करती रहूँगी और पुराने साल की बुराईयों को भूलकर नए जीवन की शुरुआत करूंगी।

तनवी केरकेट्टा
प्रथम वर्ष 'अ'

वार्षिक वनभोज

प्रियंका हंसदा
प्रथम वर्ष 'ब'

18 जनवरी को महाविद्यालय में वार्षिक वनभोज का आयोजन किया गया था। जब हमलोगों को प्रार्थना सभा में सूचना दी गयी तो मुझे बहुत खुशी हो रही थी। मुझे उस दिन का बेसब्री से इंतजार था। वनभोज के पहले दिन हमलोग पत्ता तोड़ने जंगल गए। रात को सभी ने आनंद लेते हुए पत्तल सिला। किसी-किसी को बनाने में कठिनाई हो रही थी इसलिए विभिन्न आकार का बना दे रहे थे। वनभोज के दिन सभी ने मिलजुल कर सहायता करते हुए अपनी जिम्मेदारी निभायी। भोजन पकने के दौरान हमलोगों ने खूब नाचा। फिर चखना का आनंद लिया। हमारे प्राचार्य के अनुपस्थिति में अधूरापन महसूस हो रहा था। खाना बन जाने के बाद सभी लोग जमा हुए और फादर को पकवान आशीष के लिए आमंत्रित किए। मिस नीलकुसुम एक्का के पिकनिक के बारे दो शब्द बोलने के बाद फादर पी.जे.जेम्स के द्वारा भोजन आशीष हुआ। तत्पश्चात सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। अंत में वार्षिक वनभोज का समापन सामूहिक नृत्य से किया गया।

वर्तमान के द्वारा
भविष्य को खरीदा
जा सकता है

समय-प्रबंधन

जी हाँ। सुनने से अजीब सा लगता है कि भविष्य को खरीदा जा सकता है। जब हम अपने आने वाले या आगामी कामों को आज या वर्तमान में ही कर लें तो निश्चित ही भविष्य आपके कदमों में होगा। हम भविष्य के कामों को जितनी मात्रा में वर्तमान में करने के लिए सक्षम होंगे और करेंगे, हम उतनी ही मात्रा में भविष्य को खरीद सकते हैं।

समय को कोई नहीं बदल सका है

घड़ी रूकती है तो बैटरी बदल कर हम उसे दुबारा चला सकते हैं लेकिन हमारे जीवन की बैटरी बदली नहीं जा सकती। बीता हुआ समय और बीती हुई बातें लौटकर नहीं आने वाली हैं। रूठा हुआ देवता एक बार आपके प्रसाद चढ़ाने से प्रसन्न हो सकता है, मगर बीता हुआ वक्त आदमी की जिंदगी में कभी लौटकर नहीं आता। किसी ने खूब कहा है:-

आयेगा क्या समय, समय तो चला जा रहा है
देखो अभी सुयोग्य तुम्हारे पास से छला जा रहा है
करना हो जो काम, उसी में चित्त लगा दो
आत्मा पर विश्वास करो, संदेह भगा दो।

समय हर मनुष्य के लिए अपना है

समय को न हम किसी को दे सकते हैं और न ही हम किसी से ले सकते हैं। हम खुद ही समय के मालिक हैं। हम सभी के लिए बराबर समय मिला है। चाहे उसे हम दिन-रात का समय कहें या सप्ताह, महिना या वर्ष का समय कहें। न किसी को ज्यादा, न किसी को कम, सबको बराबर दिया गया है। इसीलिए समय का प्रबंधन अति आवश्यक है। मुर्गी पालन के अंतर्गत मुर्गी को भी समय पर चारा नहीं देंगे तो वजन कम हो जाएगा, गाय का दूध समय पर नहीं निकालेंगे तो दूध की मात्रा कम हो जायेगी अर्थात कम दूध देगी। समय का प्रबंधन कहने का सही एवं सार्थक अर्थ यही होगा कि अपने आप को प्रबंध करना, अपने जीवन को प्रबंध करना, अपनी शक्ति, क्षमता, धन, प्राकृतिक संसाधन का सही उपयोग कर सकना। ईश्वर ने हमें यह अमूल्य एवं वेशकीमती जिंदगी उपहार स्वरूप दिया है जिसकी अभी औसत आयु लगभग 65-70 साल है। इसी जीवन-काल में हमें हर तरह के काम करने हैं, सफलता प्राप्त करने हैं, उपलब्धियाँ हासिल करने हैं और आने वाले समय में भी प्रेरक का काम करते रहने के लिए अपनी उपलब्धियों और पुण्यों को सहेजकर रखने की भी आवश्यकता है। इसके लिए जीवन का बँटवारा निम्न तरह से कर सकते हैं:-

शिक्षा जगत	कर्म जगत	ज्ञानशील जगत
0 - 25 वर्ष	25 - 60 वर्ष	60 वर्ष से ऊपर

उपरोक्त जीवन-काल के प्रथम भाग में हम गौर करें तो वह 0-25 वर्ष का समय शिक्षा प्राप्त करने के लिए उपयुक्त है। हम जितना पढ़ सकें, सीख सकें, जानकारी हासिल कर सकें, वह आने वाले समय या जगत के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।

दूसरा भाग 25 - 60 वर्ष का समय कर्म जगत से संबंधित है। इसके अंतर्गत हमें अपने, अपने परिवार और समाज के लिए काम करने में लगाना पड़ता है। अक्सर हमें यह देखने को मिलता है कि कुछ लोग अपने कर्म जगत का 80 प्रतिशत समय अपने लिए और सिर्फ अपने परिवार के लिए व्यतीत करते हैं तथा 20 प्रतिशत समय समाज के लिए निकालते हैं, वैसे लोगों को भविष्य में बहुत ही कम लोग जानते हैं और उनके द्वारा किए गए कार्यों को पहचानते हैं। इज्जत, प्रतिष्ठा भी कम ही मिलता है, क्योंकि उन्होंने अपने कर्म जगत में लोगों की भलाई बहुत ही कम की, अपने-आप में सिमटे रहे, लोगों से मिलना, वार्तालाप करना नहीं हुआ। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने कर्म जगत

गाब्रिएल किंडो

का 20 प्रतिशत समय अपने और अपने परिवार के लिए दिया तथा बाकी 80 प्रतिशत समय समाज के कार्य में लगाया। वैसे लोग ही महान कहलाये। रिटायर्रमेंट के बाद समाज में उन्हें इज्जत, कद्र मिली। अगर हम अपने कर्म जगत का बँटवारा अपने परिवार और समाज के लिए 50 - 50 प्रतिशत भी करते हैं तो भी हमें इज्जत, प्रतिष्ठा मिलने की संभावना बनी रहती है। हमें भविष्य में अकेलापन महसूस नहीं होगा।

अंतिम भाग 60 वर्ष से ऊपर का समय जो ज्ञानशील जगत के नाम से जाना जाता है। इस जगत में प्रवेश करने का मतलब हुआ कि व्यक्ति अब शारीरिक रूप से कमजोर होता जा रहा है। पहले की तरह शारीरिक परिश्रम नहीं कर सकता। लेकिन उनका मन, विचार एवं अनुभव परिपक्व हो गया है। अब वह अपने अनुभव, शिक्षा बाँटने एवं मार्गदर्शक का काम बखूबी कर सकता है। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन-काल में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं और उनसे अनुभव प्राप्त किया है। जो व्यक्ति ज्ञानशील जगत में ज्ञान बाँटने का काम करता है, मरने पर भी उसका नाम समाज नहीं भूलता।

यह भी देखने को मिलता है कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने समय का बँटवारा सही तरीके से नहीं किये और इस तरह न उन्होंने उचित एवं परिपूर्ण शिक्षा प्राप्त की, न ही अपने परिवार एवं समाज के लिए समय दिया और न ही उचित मार्गदर्शन देने के काबिल ही हो सके। ऐसे लोग सिर्फ और सिर्फ अपने लिए जिये। ऐसे लोगों को जिंदा रहने पर न समाज इज्जत करता है और मरने के बाद भी लोग याद नहीं करते।

कवि इकबाल ने खूब कहा है:-

''मनुष्य रोते हुए जन्मता है
शिकायत करते हुए जीता है
और
निराश होकर मर जाता है''

अतः अपने मूल्यवान समय का प्रबंधन अवश्य ही कामों के निबटारे के लिए करें। समय-प्रबंधन किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने का औजार है। यह हमारे गुणों को बढ़ाता है। अधिक से अधिक क्रियाकलाप में भाग ले सकते हैं। भाग-दौड़ की जिंदगी से ऊपर उठकर परिवार एवं समाज को समय दे सकते हैं। हम अपने जीवन की अगुवाई स्वयं करते हुए एक आनंदमय जीवन जी सकते हैं। समय-प्रबंधन हमें फिजूल काम करने से रोकता है।

समय हमेशा समानांतर रेखा में अनवरत् एक ही गति से चलती है। अतः समय के साथ-साथ अपने कामों को भी गति प्रदान करने की आवश्यकता है। नही तो, समय आगे निकलता चला जाएगा और हम और हमारे काम पीछे छूट जायेंगे।

जीवन जीने की कला

अपने से कम जिंदगी में किसी को मत देखो,
अगर उठना है ऊपर, तो तुम झुकना सीखो।

अगर बढ़ना है जिंदगी में आगे तुम्हें,
तो राह से पत्थर हटाना सीखो।

अगर जिंदगी में सम्मान पाना है तुम्हें,
तो औरों का आदर करना सीखो।

अगर हर कामों में चाहिए सफलता तुम्हें,
तो सच्चाई की बात पर तुम चलना सीखो।

अगर जीतना है अपनी जिंदगी में तुम्हें,
तो हार को अपने गले से लगाना सीखो।

अगर प्यार चाहिए अपने प्रियजन का तुम्हें,
तो अपना दिल तुम उन्हें देना सीखो।

सुषमा कुमारी
द्वितीय वर्ष 'अ'

आत्मविश्वास

हार मिले तो हारना मत,
दुनिया से डरकर भागना मत।
मंजिल दूर ही सही पर राह होगी,
उस पर चलने से डरना मत।

कोशिश एक बार नहीं लगातार करना,
रुककर जीत का इंतजार करना मत।
कैसे सही दिशा में करें कोशिश,
भाग्य भरोसे कुछ छोड़ना मत।

सपना देखना छोड़ना मत,
सपना भविष्य का आईना होता है।
मेहनत एक दिन रंग जरूर लाएगी,
आत्मविश्वास खुद पर से खोना मत।

Session: 2023-25
Section: A

Session: 2023-25
Section: B

Session: 2024-26
Section: A

Session: 2024-26
Section: B

PTEC Staff

Presenting a Momento to Bhanu Priya

Republic Day 2025

Friendly Football Match – between PTEC & SSC brothers

Vishv Adivasi Divas

Drawing & Painting